Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSC – CDS

सम्मिलित रक्षा सेवा (CDS)

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

भाग - 1

भारत का इतिहास, कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	सिंधु घाटी सभ्यता	1
2	वैदिक काल	6
3	जैन धर्म और बौद्ध धर्म	11
4	महाजनपद, मौर्य और मौर्योत्तर युग	16
5	गुप्त एवं गुप्तोत्तर राजवंश	24
6	चोल, चालुक्य और पल्लव राजवंश	28
7	कला एवं वास्तुकला में प्राचीन भारत	32
8	प्राचीन भारत में भाषा और साहित्य	41
9	दिल्ली सल्तनत (1206–1526 AD)	45
10	विजयनगर साम्राज्य	53
11	मुग़लकाल (1526–1857)	56
12	मध्यकालीन काल में कला और वास्तुकला	64
13	भक्ति और सूफी आंदोलन	67
14	1857 के पूर्व प्रशासन	74
15	1857 का विद्रोह	78
16	1858 के पश्चात् प्रशासनिक परिवर्तन	84
17	शिक्षा एवं प्रेस का विकास	86
18	सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन	92
19	राष्ट्रवाद का जन्म (मध्यम चरण 1885–1905)	103
20	उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग चरमपंथी चरण	108
21	जन आंदोलन गांधीवादी युग (1917–1925)	120
22	स्वराज के लिए संघर्ष (1925–1939)	128
23	स्वतंत्रता की ओर (1940–1947)	144

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	महत्वपूर्ण व्यक्ति और घटनाएँ	153
25	चित्रकला	162
26	हस्तशिल्प	168
27	नृत्य और संगीत	171
28	विश्व धरोहर स्थल	178
29	भारतीय दर्शनशास्त्र के विद्यालय	181
30	मेले एवं त्यौहार	184
31	महत्वपूर्ण संस्थान	191
32	पुरस्कार	194

CHAPTER 1

सिंधु घाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार:

- सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे कांस्य युग या हड़प्पा सभ्यता के रूप में भी जाना जाता है, एक शहरी सभ्यता थी जो सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के आसपास विकसित हुई थी। यह सभ्यता लगभग 2600 ईसा पूर्व और 1700 ईसा पूर्व के बीच फली-फूली। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निदेशक जॉन मार्शल द्वारा इसे "सिंधु घाटी सभ्यता" नाम दिया गया था। प्रथम उत्खनित स्थल हड़प्पा था, जिसे दया राम साहनी ने वर्ष 1921 में खोजा था, इसी कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है।

नोट: अलेक्जेंडर कनिंघम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रथम अध्यक्ष थे, तथा उन्हें पुरातत्व के जनक के रूप में भी जाना जाता है।

सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार

भारत
- जम्मू और कश्मीर
- पंजाब
- हरियाणा
- राजस्थान
- गुजरात
- पश्चिमी उत्तर प्रदेश
- जम्मू और कश्मीर महाराष्ट्र

पाकिस्तान
- पंजाब
- सिंध
- बलूचिस्तान(पूर्व-हड़प्पा चरण)

अफगानिस्तान
- शोर्तुगई
- मुंडीगाक

Toppersnotes
Unleash the topper in you

मांडामंडा (जम्मू और कश्मीर)

सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान) (मकरान तट के पास)

आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)

दैमाबाद (महाराष्ट्र)

- सबसे उत्तरी स्थल - मांडा (जम्मू और कश्मीर)
- सबसे दक्षिणी स्थल - दैमाबाद (महाराष्ट्र)
- सबसे पूर्वी स्थल - आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)
- सबसे पश्चिमी स्थल - सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान)

सिंधु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषताएं.

1. नगर नियोजन :

➢ कस्बे को दो भागों में विभाजित किया गया था: :

a) किला -:

✓ किला, जिसे अक्सर 'एक्रोपोलिस' कहा जाता है, यह प्राचीन नगरों जैसे हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और कालीबंगा का ऊँचा और अधिक संकुचित भाग था।

✓ यह दीवारों से घिरा होता था और निचले कस्बे से भौतिक रूप से अलग होता था।

▪ लोथल में, किला दीवारों से घिरा हुआ नहीं था, लेकिन इसे ऊँचाई पर बनाया गया था।

✓ यह क्षेत्र राजाओं, पुरोहितों और अन्य प्रमुख व्यक्तियों के निवास के लिए उपयोग में आता था, साथ ही यहाँ प्रशासनिक भवन, अन्नागार और सार्वजनिक स्नानागार भी होते थे। किला इन प्रारंभिक शहरी बस्तियों के संगठन और शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

➢ निचला क़स्बा - :

✓ निचला क़स्बा, जो ऊँचाई में कम लेकिन आकार में बड़ा होता था, यह प्राचीन नगरों में साधारण लोगों के रहने का क्षेत्र था। यह हिस्सा भी दीवारों से घिरा होता था, जो इसके निवासियों को सुरक्षा प्रदान करता था।

टिप्पणी:

➢ किले विहीन शहर: चन्हूदड़ो

c) ग्रिड प्रणाली :

➢ सड़कें और गलियां एक - दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

d) विशाल स्नानागार:

➢ मोहनजोदड़ो के एक आंगन में एक विशाल आयताकार स्नानागार बनाया गया था, जो चारों ओर से गलियारों से घिरा हुआ था। पकी हुई ईंटों का बना इसका फर्श जिप्सम मोर्टार से जलरोधी बनाया गया था।

➢ यह स्नानागार किले में स्थित था और इसका उपयोग लोगों द्वारा धार्मिक स्नान के लिए किया जाता था।

e) विशाल अन्नागार

➢ मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में खोजी गई यह आयताकार संरचना किले में एक ऊँचे चबूतरे पर बनाई गई थी, ताकि इसे पानी से सुरक्षित रखा जा सके। इसका उपयोग अनाज भंडारण के लिए किया जाता था और यह इस क्षेत्र की सबसे बड़ी इमारत थी, जिसकी लंबाई 150 फीट और चौड़ाई 50 फीट थी।

नोट: हड़प्पा में अन्नागार - कुल 12 (प्रत्येक पंक्ति में 6)

f) जल निकासी प्रणाली

➢ एक सुविकसित जल निकासी प्रणाली थी, जिसमें जिप्सम मोर्टार से लेपित मुख्य होल बने हुए थे।

➢ पानी के संरक्षण के लिए किले के दक्षिण में जलाशयों का निर्माण किया गया था। (धोलावीरा में 16 छोटे और बड़े जलाशय खोजे गए हैं।)

2. कृषि

➢ सिंधु घाटी सभ्यता में कृषि के प्रमाणों में गेहूं, जौ, मटर, सरसों, तिल, कपास और राई शामिल हैं।

➢ हल के टेराकोटा नमूने चोलिस्तान और बनावली (हरियाणा) में खोजे गए हैं, जबकि जुते हुए खेत के अवशेष कालीबंगा (राजस्थान) में पाए गए हैं।

➢ इसके अतिरिक्त, बलूचिस्तान और अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में पानी संग्रहित करने के लिए "गोबर बांध/नाला" का निर्माण किया गया था।

➢ शोर्तुगई (अफगानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य भी मिले हैं। यह सभ्यता कपास उत्पादन करने वाली पहली सभ्यता थी, जिसे "सिंदोन" कहा जाता था, और यहाँ कताई चर्खे के प्रमाण भी मिले हैं।

3. पालतू जानवर:

➢ भैंस, बकरी, भेड़, सूअर, बैल जैसे पालतू जानवरों के साक्ष्य मिले है

✓ उनके द्वारा गाय नहीं पाली जाती थी

- सामान ढोने के लिए गधे और ऊँट जैसे पालतू जानवरों का उपयोग किया जाता था
- घोड़े के साक्ष्य: सुरकोटदा (केवल एक हड्डी मिली)
- उन्हें हाथियों के बारे में ज्ञान था (मुहरों पर अंकन के साक्ष्य)

4. मुहरें

- मुहरें चित्रात्मक और ज्यामितीय आकार (वर्ग, आयताकार और गोल) की वस्तुएँ थीं, जिन्हें मुख्य रूप से मुलायम नदीय पत्थर सेलखड़ी से निर्मित थी ।
- मुहरें का उपयोग व्यापार, ताबीज, शिक्षा जैसे कई उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
- एक महत्वपूर्ण उदाहरण 'पशुपति मोहर' है, जिसमें एक देवता को कई जानवरों के साथ दर्शाया गया है।
  मुहरों पर दर्शाए गए जानवर: भैंस, हाथी, बाघ, हिरण, और एक सींग वाला गेंडा।

5. उपकरणऔर शिल्प

- यहाँ से कांस्य और तांबे के औजार मिले
- सिन्धु घटी सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था
- प्रमुख व्यवसाय: वस्त्र निर्माण, ईंट बिछाना, नाव बनाना, मनके/गहने बनाना
- जेडाइट पत्थर: दाओजली हेडिंग (असम) से मिला है
- यहाँ कर्नाटक से खरीदे गए सोने के आभूषण भी मिले है
- वे मिट्टी के बर्तन बनाना जानते थे क्योंकि यहाँ से कुम्हार का चाक मिला है (लाल और काले बर्तन अलग-अलग स्थानों से प्राप्त हुए है)।

6. व्यापार

- अन्य सभ्यताओं में मिली सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरें यह दर्शाती हैं कि सभ्यताओं के बीच व्यापारिक संबंध स्थापित थे। मेसोपोटामिया (इराक), अफगानिस्तान, सुमेर (बगदाद), दिलमुन (बहरीन) और मगन (ओमान) के साथ व्यापारिक संबंधों के प्रमाण मिले हैं।
- बाट और माप के साक्ष्य इस बात का संकेत देते हैं कि व्यापार में मानकीकरण था।
- व्यापार में मुद्रा का उपयोग नहीं किया जाता था; यहाँ वस्तु - विनिमय प्रणाली प्रचलित थी।
- अफगानिस्तान में स्थित शोर्तुगई सिंधु घाटी सभ्यता का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था।
- प्रमुख व्यापारिक वस्तुएँ: धातु (सोना, चांदी, कांसा आदि), रत्न (लाजवर्द, फिरोजा, कार्नेलियन आदि), टेराकोटा के बर्तन, सीप, हाथीदांत, कपास (विदेशियों द्वारा 'सिंदोन' कहा गया) आदि।

7. पूजा-अर्चना:

- लिंग/शिवलिंग(Phallus): पुरुष योनि/जननांग अंग
- पुरुष देवता पशुपति को मुहरों पर योग मुद्रा में बैठे हुए दर्शाया गया था।
- टेराकोटा मूर्तियों में मातृ देवी का चित्रण
- यहाँ वृक्षों और पशुओं की पूजा की जाती थी

8. लिपि

- चित्रात्मक लिपि थीजिसे बॉस्ट्रोफेदों के नाम से भी जाना जाता था
- यह दाएं से बाएं फिर बाएं से दाएं फिर दाएं से बाएं लिखी गई है
- सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि अभी तक पढ़ी नहीं गई है।

9. मूर्तियाँ

- त्रिभंगा मुद्रा में नृत्य करती हुई लड़की की कांस्य मूर्ति
- सेलखड़ी से बनी दाढ़ी वाले व्यक्ति की मूर्ति
  (दोनों मोहनजादड़ो से प्राप्त हुई है)

10. अंत्येष्टि (दफ़नाने) के प्रकार

- दोहरी अंत्येष्टि/मिट्टी के बर्तनों में अंत्येष्टि → लोथल
- पूर्ण अंत्येष्टि और दाह-संस्कार के बाद की अंत्येष्टि: मोहनजोदड़ो
- लकड़ी के ताबूत में अंत्येष्टि: हड़प्पा
- विस्तारित अंत्येष्टि → सोनौली, उत्तर प्रदेश

सिंधु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्

स्थल/वर्ष	स्थान/नदी/खोजकर्ता	विशेषताएँ
1. हड़प्पा (1921)	स्थान: पंजाब,पाकिस्तान नदी: रावी खोजकर्ता: दयाराम साहिनी	प्रत्येक पंक्ति में 6 अन्नागार (2 पंक्तियों में कुल 12 अन्नागार) लिंगम, योनि और मातृ देवी की टेराकोटा मूर्तियाँ
2. चन्हुदड़ो	स्थान: सिंध, पाकिस्तान नदी: सिंधु खोजकर्ता:गोपाल मजूमदार	एकमात्र नगर जहां किला नहीं है, यहाँ से मनका(मोती) बनाने के कारखाने के साक्ष्य मिले है
3. मोहनजोदड़ो	स्थान: सिंध, पाकिस्तान नदी: सिंधु खोजकर्ता: आर. डी. बनर्जी	'मृतकों का टीला' के नाम से जाना जाता है, किला, विशाल स्नानागार और विशाल अन्नागार। मातृ देवी की मिट्टी की मूर्ति, नृत्य करती लड़की की कांस्य मूर्ति, दाढ़ी वाले व्यक्ति की मूर्ति
4. लोथल	स्थान: गुजरात नदी: भोगवा खोजकर्ता: एस.आर. राव	प्राचीन बंदरगाह, गोदीवाड़ा (जहाज़ बनाने का स्थान), टेराकोटा जहाज, अग्नि वेदी, संयुक्त अंत्येष्टि, शतरंज, मनका कारखाना
5. बालाथल और कालीबंगा	स्थान: राजस्थान नदी: घग्गर खोजकर्ता: ए. घोष	7 अग्नि वेदिकाएँ मिलीं, काली चूड़ियाँ, जुते हुए खेत, ऊँट की हड्डियाँ
6. सुरकोताडा	स्थान: गुजरात खोजकर्ता: जगपति जोशी	घोड़े की हड्डियों के प्रथम वास्तविक अवशेष
7. सुत्कागेंडोर	स्थान: पाकिस्तान	तटीय शहर, सबसे पश्चिमी स्थल
8. धोलावीरा	स्थान: गुजरात खोजकर्ता: जगपति जोशी खुदाई शुरू : आर.एस.बिष्ट	विशाल जलाशय मिले है। 2021 में इसे विश्व धरोहर स्थल सूची में शामिल गया (भारत में 40वाँ)
9. राखीगढ़ी	स्थान: हरियाणा नदी: घग्गर खोजकर्ता: अमरेंद्र नाथ	भारत का सबसे बड़ा स्थल, टेराकोटा से निर्मित पहिये और खिलौने
10. भिराणा	हरियाणा	सबसे पुराना सिन्धु घाटी सभ्यता स्थल

11. बनावली	स्थान: हरियाणा नदी: घग्गर खोजकर्ता: आर.एस.बिष्ट	ग्रिड पैटर्न का अभाव, सूखी सरस्वती नदी
12. रोपड़	स्थान: पंजाब, भारत नदी: सतलुज	कुत्ते के साथ अंत्येष्टि, अंडाकार अंत्येष्टि गड्ढे, यह स्वतंत्र भारत का पहला हड़प्पा स्थल है
13. आलमगीरपुर	स्थान: मेरठ, उत्तर प्रदेश नदी: यमुना	सबसे पूर्वी स्थल
14. मेहरगढ़	स्थान: पाकिस्तान	मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार
15. कोट दीजी	स्थान: पाकिस्तान	टार, बैल और मातृ देवी की मूर्तियाँ
16. बालू	स्थान: हरियाणा	विभिन्न पौधों के सर्वप्रथम अवशेष लहसुन के साक्ष्य)।
17. दैमाबाद	स्थान: महाराष्ट्र	सबसे दक्षिणी स्थल, कांस्य रथ
18. केरल-नो-धोरो	स्थान: गुजरात	नमक उत्पादन केंद्र
19. मांडा	स्थान: जम्मू और कश्मीर	सबसे उत्तरी स्थल

2 CHAPTER वैदिक काल

घुमंतू और देहाती आर्यों का मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में आगमन वैदिक काल की शुरुआत को दर्शाता है।

वैदिक काल को दो युगों में विभाजित किया जा सकता है -

वैदिक काल

- **पूर्व वैदिक काल**
  - (1500-1000 ईसा पूर्व):
  - इसे भारत की ताम्रपाषाण संस्कृति (Chalcolithic Culture) से जोड़ा जाता है।
- **उत्तर वैदिक काल**
  - (1000-600 ईसा पूर्व):
  - इसे उत्तर भारत के लौह युग की चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति (Painted Grey Ware Culture) से जोड़ा जाता है।

पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

- भारत में आर्यों के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत वैदिक साहित्य है, जो संस्कृत में लिखा गया है।
- ऋग्वेद में आर्यों और उनके प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र सप्त-सिंधव का उल्लेख मिलता है।
- सप्त-सिंधव क्षेत्र सात नदियों का क्षेत्र था, जिनके नाम निम्नलिखित हैं:
  1. सिंधु (Indus)
  2. वितस्ता (झेलम - Jhelum)
  3. अस्क्निी (चिनाब - Chenab)
  4. परुष्णी (रवि - Ravi)
  5. विपाशा (ब्यास - Beas)
  6. शतुद्रि (सतलज - Sutlej)
  7. सरस्वती (नदितमा / हर्कवती - Saraswati)
- ऋग्वेद के नंदी सूक्त में पूर्व में गंगा नदी और पश्चिम में कुंभा (काबुल नदी) का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेदिक ऋचाएं उस समय के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रतिबिंबित करती हैं।
- इसमें आर्यों और दास या दस्यु (गैर-आर्य) के बीच संघर्ष का वर्णन है।
- साथ ही, यह भरत कुल के दिवोदास द्वारा एक प्रमुख दस्यु सरदार शंबर की पराजय का उल्लेख करता है।

ऋग्वेद

- यह चार वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद) में से एक है।
- यह इंडो-यूरोपीय भाषा का सबसे प्राचीन उदाहरण है।
- इसमें अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण और अन्य देवताओं को अर्पित प्रार्थनाओं का संग्रह है।
- इसमें 1028 मंत्र हैं, जो 10 मंडलों (पुस्तकों) में विभाजित हैं:
  - ✓ द्वितीय से सप्तम मंडल सबसे पहले रचित हुए थे।
  - ✓ प्रथम और दशम मंडल सबसे अंत में रचित हुए।

प्रारंभिक वैदिक काल का भौगोलिक विस्तार

भारतीय उपमहाद्वीप में प्रारंभिक आर्य पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास करते थे।

ToppersNotes Unleash the topper in you

जेंड अवेस्ता (Zend Avesta)

- जेंड अवेस्ता पारसी धर्म (जोरोआस्ट्रियन धर्म) का एक प्रमुख पर्शियन/ईरानी ग्रंथ है।
- यह ग्रंथ इंडो-ईरानी भाषाएं बोलने वाले लोगों की भूमि और उनके देवताओं का उल्लेख करता है।
- इसमें भारत के उत्तर और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों का संदर्भ मिलता है।
- इसमें कुछ शब्द ऐसे हैं जो वैदिक ग्रंथों के शब्दों से भाषाई समानता दर्शाते हैं।
- यह ग्रंथ एक अप्रत्यक्ष साक्ष्य प्रदान करता है कि आर्यों का प्रारंभिक निवास स्थान भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर था।

पूर्व वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था

- इस काल का समाज कुल (परिवार), विस (कुल) और ग्राम (समुदाय) के आधार पर संगठित था।
- 'कुल' समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई होती थी, और कुल का मुखिया 'कुलप' कहलाता था।
- चातुर्वर्ण्य व्यवस्था- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
  - ✓ इसका निर्धारण कर्म के आधार पर होता था और वर्णों के मध्य गतिशीलता मौजूद थी।
- महिलाओं को आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के लिए पुरुषों के समान अवसर प्राप्त थे।
- महिला विद्वान: अपाला, विश्ववारा, घोषा और लोपामुद्रा।
- बाल विवाह की प्रथा मौजूद नहीं थी।
- विधवा पुनर्विवाह: नियोग प्रथा।
- प्रेम विवाह होते थे, जिसे गंधर्व विवाह कहा जाता था।
- समाज पितृसत्तात्मक था।
- दास प्रथा मौजूद थी।
  - ✓ दास दो प्रकार के होते थे: दास (पराजित आर्य) और दस्यु (अनार्य)।

पूर्व वैदिक काल की अर्थव्यवस्था

- मुख्य व्यवसाय पशुपालन था, ऋग्वेद में गायों से संबंधित वर्णित कई शब्दों का उल्लेख होता है जैसे:
  - ✓ गोपा – गाय
  - ✓ गोपजन्य – गाय का स्वामी
  - ✓ दूत्री – गाय दुहने वाला
  - ✓ गोधूम – गेहूं
  - ✓ गोधूलि – संध्या
  - ✓ गविष्ठी – गायों की खोज
- तांबेऔर कांसे से निर्मित उपकरण भी अर्थव्यवस्था का हिस्सा थे।
- "निष्क" नामक सोने के सिक्के प्रचलित थे।
- करों की कोई औपचारिक प्रणाली नहीं थी, लेकिन 'बलि' नामक कर स्वेच्छा से कबीले के मुखिया को अर्पित किया जाता था।

पूर्व वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

- राजनीतिक व्यवस्था में भूमि की अवधारणा का विकास नहीं हुआ था, बल्कि यह कबीलों के आधार पर निर्धारित थी। इन कबीलों को 'जन' कहा जाता था और आर्य कबीलों का मुखिया "राजन" कहलाता था।
- राजन की सहायता के लिए सभा, समिति और विदथ नामक जनप्रतिनिधि संस्थाएं होती थी।

1. सभा	कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों (जन के वरिष्ठ सदस्य) का समुदाय, जिसमें महिलाएं भी शामिल थीं।
2. समिति	यह राजन का चुनाव करने वाले सामान्य लोगों का समूह था। इसमें केवल पुरुष ही हिस्सा लेते थे।
3. विदथ	इसका निर्माण धार्मिक उद्देश्य और धर्म से संबंधित निर्णय लेने के लिए किया जाता था । इसमें पुरुष और महिला दोनों भाग लेते थे।

- अधिकारियों का पदानुक्रम
    - ✓ पुरोहित: राजा के मुख्य सलाहकार
    - ✓ सेनानी: सेना प्रमुख
    - ✓ ग्रामणी: गाँव का मुखिया

पूर्व वैदिक काल का धर्म

- इस काल के लोग प्रकृति उपासक थे – पृथ्वी (पृथ्वी), इंद्र, अग्नि (अग्नि), वायु (हवा), अदिति (देवी), वरुण (वर्षा), सावित्री (गायत्री मंत्र समर्पित)।

मृद्भांड: गेरू रंग के मिट्टी के बर्तन।

वेद

- भारतीय उपमहाद्वीप में आगमन के बाद आर्यों ने संस्कृत भाषा में वेदों की रचना की शुरूआत की।
- सर्वप्रथम ऋग्वेद की रचना की गई, जो आर्यों के सम्बन्ध में जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है।
- वेदों का ज्ञान मौखिक रूप से (श्रुति) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया जाता था।
- वेदों को "अपौरुषेय" कहा जाता है, मान्यता है कि वेद मनुष्य द्वारा नहीं, बल्कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं। कुल 4 वेद हैं और प्रत्येक के 4 उप-वर्गीकरण हैं।

वेदों का वर्गीकरण

ऋग्वेद	सामवेद	यजुर्वेद	अथर्ववेद
➢ यह सबसे प्राचीन वेद है। ➢ इसमें सप्तसैन्धव या सात नदियों के प्रदेश का उल्लेख किया गया है। ➢ इसकी रचना पूर्व वैदिक काल में की गई। ➢ इसमें 1028 सूक्त हैं, जिन्हें 10 मंडलों में व्यवस्थित किया गया है – इनमें यज्ञ के लिए उपयोग होने वाले मंत्र शामिल हैं। ➢ इन मंत्रों का पाठ "होतृ" द्वारा किया जाता था। ➢ यह भौतिक समृद्धि और प्राकृतिक सुंदरता पर आधारित है। ➢ देवता: इंद्र (प्रमुख देवता), अग्नि, वरुण, रुद्र, आदित्य, वायु, अश्विनी कुमार। ➢ देवियाँ: उषा, पृथ्वी, वाक। ➢ उपनिषद 1. ऐतरेय 2. कौषीतकी	➢ सामवेद को "संगीत का जन्मदाता" या "मंत्रों का ग्रंथ" भी कहा जाता है। ➢ इसमें संगीत और गायन पर विशेष ध्यान दिया गया है। ➢ पाठकर्ता- उद्गाता ➢ कुल मंत्र: 1875 (75 मूल मंत्र और शेष ऋग्वेद के शाकल शाखा से लिए गए हैं)। ➢ उपनिषद 1. छांदोग्य उपनिषद 2. केन उपनिषद	➢ इसमें अनुष्ठानों और मंत्रों का संग्रह है। ➢ इसकी दो प्रमुख शाखाएं हैं - शुक्ल और कृष्ण। ➢ इन संहिताओं को क्रमशः वाजसनेयी संहिता और तैत्तिरीय संहिता भी कहा जाता है। ➢ पाठकर्ता- अध्वर्यु ➢ उपनिषद 1. बृहदारण्यक उपनिषद 2. कठोपनिषद	➢ इसे "ब्रह्म वेद" के नाम से भी जाना जाता है। ➢ यह दो ऋषियों, अथर्वा और अंगिरस, से संबंधित है; इसलिए इस वेद को अथर्वांगिरस भी कहा जाता है। ➢ यह जादू-टोना और तांत्रिक सूत्रों का वेद है। ➢ इसमें मुख्यतः कई बीमारियों के उपचार से सम्बंधित मन्त्रों का वर्णन है। ➢ इसकी दो प्रमुख शाखाएँ हैं - पैप्पलाद और शौनक। ➢ पाठकर्ता- ब्रम्हा ➢ उपनिषद 1. माण्डूक्य उपनिषद: इसमें "सत्यमेव जयते" का उल्लेख किया गया है। 2. महा उपनिषद: इसमें "वसुधैव कुटुंबकम्" का उल्लेख किया गया है।

नोट: ऋग्वेद के मंडल

- गायत्री मंत्र: ऋषि विश्वामित्र द्वारा रचित (तीसरे मंडल में उल्लेख)।
- दूसरे से लेकर सातवें मंडल की रचना सबसे पहले की गयी थी।
- दसवां मंडल: इसमें पुरुष सूक्त का उल्लेख है, जो ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में बताता है, जिसमें ब्रह्मा के शरीर के विभिन्न अंगों से चार वर्ण (चातुर्वर्ण्य) उत्पन्न हुए —
  - ✓ मुख से ब्राह्मण
  - ✓ भुजाओं से क्षत्रिय
  - ✓ जांघों से वैश्य
  - ✓ पैरों से शूद्र
- नौवां मंडल: इसमें सोम देवता का उल्लेख है।

ऋग्वेद में वर्णित भौगोलिक जानकारी

a. हिमवंत पर्वत (हिमालय)
b. मुंजवत पर्वत (हिंदूकुश)
c. सप्त सैन्धव प्रदेश (सात नदियाँ) - वैदिक आर्यों का निवास स्थान

वेदों के उपविभाजन

1. संहिता
   - ✓ ये वेदों के मुख्य अंग है जिसमें वैदिक मंत्रों और प्रार्थनाओं का संग्रह है जो विभिन्न अनुष्ठानों से सम्बंधित हैं।
2. ब्राह्मण
   - ✓ ये श्रुति साहित्य का हिस्सा (प्रकट ज्ञान) है।
   - ✓ रचना काल: 900-700 ई.पू.।
   - ✓ प्रत्येक वेद के साथ एक ब्राह्मण ग्रंथ संलग्न है, जो वेदों पर टीकाओं का संग्रह है:
     a. ऋग्वेद: ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकी ब्राह्मण
     b. सामवेद: तांड्य महाब्राह्मण, षड्विंश ब्राह्मण
     c. यजुर्वेद: तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण
     d. अथर्ववेद: गोपथ ब्राह्मण
   - ✓ इसमें कथाओं, तथ्यों, नैतिक आख्यानों और वैदिक अनुष्ठानों की विस्तृत व्याख्याएँ की गयी हैं।
   - ✓ इसमें अनुष्ठान करने के निर्देश और इन अनुष्ठानों में प्रयुक्त पवित्र शब्दों के प्रतीकात्मक महत्व की व्याख्या भी शामिल है।
3. आरण्यक
   - ✓ आरण्यक ग्रंथ को प्रत्येक वेद के साथ शामिल किया गया है, जो वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों के पीछे के दर्शन का वर्णन करते हैं।
   - ✓ यह जीवन के चक्र (जन्म और मृत्यु) और आत्मा पर केंद्रित हैं।
   - ✓ इन्हें वनवासी मुनियों (पवित्र और विद्वान व्यक्ति) द्वारा सिखाया जाता था।
4. उपनिषद
   - ✓ वैदिक साहित्य के विकास के अन्तिम चरण में उपनिषद्-ग्रन्थ आते हैं। इसलिए इन्हें "वेदांत" भी कहा जाता है।
   - ✓ उपनिषदों में गुरु-शिष्य के संवादों के रूप में बहुत गूढ़ बातें कही गई हैं।
   - ✓ इनकी विवेचनाओं में आत्मा, ब्रह्म तथा संसार के रहस्यों को उल्लेखित किया गया है।
   - ✓ ये मानव जीवन, मोक्ष (मुक्ति) का मार्ग, ब्रह्मांड और मानव जाति की उत्पत्ति, जीवन-मृत्यु चक्र और मानव के भौतिक व आध्यात्मिक खोजों पर विश्लेषण करते हैं।
   - ✓ कुल 200 ज्ञात उपनिषद हैं; इनमें से 108 को "मुक्तिका कानन" कहा गया है।

नोट: सत्यकाम जाबाला

एक वैदिक ऋषि, गौतम ऋषि के अनुयायी, जो छांदोग्य उपनिषद के अध्याय IV में वर्णित हैं। उन्होंने अविवाहित माँ होने के कलंक को चुनौती दी।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.)

- 1000 ई. पू. में लोहे के प्रयोग से उत्तर वैदिक काल की शुरुआत मानी जाती है।
- इस काल में लोहे के उपकरणों की सहायता से वनों को साफ किया गया और अन्य क्षेत्रों में विस्तार सुनिश्चित किया गया।
- शतपथ ब्राह्मण में आर्यों के पूर्वी गंगा के मैदानी क्षेत्र में विस्तार का उल्लेख है।

नोट: महाभारत (950 ई.पू.) का संकलन चौथी शताब्दी (400 ई.) में हुआ।

- इस काल में अन्य 3 वेदों (साम, अथर्व और यजुर्वेद) की रचना की गयी।
- उत्तर वैदिक कालीन ग्रंथों में गंगा, यमुना, गंडक और सदानीरा नदियों का उल्लेख है।
- कुरु जनजाति उत्तर वैदिक काल की सबसे महत्वपूर्ण जनजाति थी। इसमें दो कुल शामिल थे - पांडव और कौरव।
  - ✓ परीक्षित और जन्मेजय इसके प्रसिद्ध शासक थे।

उत्तर वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था

- इस काल में भूमि प्रमुख आर्थिक संपत्ति बन गयी, किन्तु करों की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी।
- मुख्य व्यवसाय- कृषि
  - ✓ जौ, चावल और गेहूं की फसलों की खेती होती थी।
- निष्क के अलावा, शतमान और कृष्णल जैसे सोने और चांदी के सिक्केप्रयोग में लाये जाते थे
  - ✓ इस काल में बेबीलोन जैसे देशों के साथ व्यापार होता था।
- इस काल में धातुकर्म , चमडे का कार्य , बढ़ईगीरी और मिट्टी के बर्तन निर्माण में काफी प्रगति हुई।
- लकड़ी का हल (रुरा) का उपयोग किया जाता था।

उत्तर वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

- इस काल में राजन सबसे महत्वपूर्ण पद था।
- राजन की सहायता और सलाह के लिए पुरोहित वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
  - ✓ राजन की सर्वोच्चता को निर्धारित करने के लिए इसे विभिन्न अनुष्ठानिक यज्ञों से जोड़ दिया गया, जैसे:
    a. राजसूय (राज्याभिषेक समारोह, जिसमें पुरोहित वर्ग के आशीर्वाद से राजन को सिंहासन प्राप्त होता है)
    b. अश्वमेध (राज्य विस्तार से संबंधित)
    c. वाजपेय (रथ दौड़)
- राजन की उपाधियाँ: राजविश्वजन, अहिलभुवनपति, एकराट और सम्राट।
- महत्वपूर्ण अधिकारी-
  a. पुरोहित: मुख्य सलाहकार
  b. सेनानी: सेना प्रमुख
  c. ग्रामणी: गाँव का मुखिया
- जनप्रतिनिधि संस्थाओं में परिवर्तन
  - ✓ सभा: महिलाओं को इसमें प्रवेश की अनुमति नहीं थी।
  - ✓ समिति: इसका महत्व कम हो गया।
  - ✓ विदथ: इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।

उत्तर वैदिक कालीन समाज

- इस काल में वर्ण व्यवस्था कठोर हो गई और गोत्र प्रणाली मजबूत हो गई। अतः विभिन्न वर्णों के मध्य गतिशीलता कम हो गई।
- इस काल में चार आश्रमों की संकल्पना दी गयी:
  a. ब्रह्मचर्य (अध्ययन काल)
  b. गृहस्थ (विवाहित जीवन)
  c. वानप्रस्थ (घर से आंशिक संन्यास, ज्ञान प्राप्ति के लिए)
  d. संन्यास (पूर्ण संन्यास, आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए)
- धर्म
  - ✓ प्रजापति (सृष्टिकर्ता) सबसे महत्वपूर्ण देवता थे ।
  - ✓ अन्य महत्वपूर्ण देवता- विष्णु (संरक्षक) और रुद्र (विनाशक) ।
- मृद्भांड: धूसर - रंग के मिट्टी के बर्तन।

3 CHAPTER जैन धर्म और बौद्ध धर्म

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व की अवधि भारत में नए धर्मों जैसे जैन धर्म और बौद्ध धर्म के उदय के लिए जाना जाता है। इस दौर में कृषि सुधार, व्यापार का विकास, मुद्रा का चलन और शहरीकरण की प्रक्रिया ने समाज में असमानता और सामाजिक संघर्षों को बढ़ा दिया था । हिंसा, क्रूरता, चोरी, द्वेष और झूठ जैसे नई सामाजिक समस्याएं सामने आईं। इन समस्याओं के चलते लोगों ने शांति और सामाजिक समानता का संदेश देने वाले नए धर्मों, जैसे जैन धर्म और बौद्ध धर्म का स्वागत किया। वैश्य और अन्य व्यापारी वर्ग भी समाज में बेहतर स्थान चाहते थे, इसलिए उन्होंने भी बौद्ध धर्म और जैन धर्म को संरक्षण दिया।

जैन धर्म –

- जैन दर्शन को सबसे पहले, तीर्थंकर ऋषभ देव (पहले तीर्थंकर, जिन्हें आदिनाथ के नाम से भी जाना जाता है) द्वारा प्रतिपादित किया गया था। 24वें और अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर ने जैन धर्म को मुख्य रूप से प्रोत्साहित किया ।
- वर्धमान महावीर के अनुयायियों को 'जैन' कहा जाता है।
  - ✓ "जैन" शब्द "जिन" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है 'विजेता' (आत्मा का विजेता)।
  - ✓ भद्रबाहु द्वारा रचित 'कल्पसूत्र' में 24 तीर्थंकरों का उल्लेख है।

प्रमुख तीर्थंकर –

नाम	जन्म स्थान	प्रतीक चिन्ह
1. ऋषभ देव/आदिनाथ (प्रथम)	अयोध्या	बैल
2. अजीतनाथ	अयोध्या	हाथी
22. नेमिनाथ/अरिष्टनेमि	सौरिपुर	शंख
23. पार्श्वनाथ	वाराणसी	नाग (सर्प)
24. वर्धमान महावीर (अंतिम)	वैशाली (बिहार)	शेर (सिंह)

नोट: यजुर्वेद में तीन तीर्थंकरों ऋषभ देव, अजीतनाथ और अरिष्टनेमि का उल्लेख है।

वर्धमान महावीर –

जैन धर्म को धर्म के रूप में स्थापित करने का श्रेय वर्धमान महावीर को जाता है।

- जन्म: 540 ई. पू. (लगभग), कुंडग्राम (वैशाली, बिहार),एक गण-संघ के शासक परिवार में हुआ था।।
  - ✓ पिता: सिद्धार्थ (कुल: ज्ञातृक क्षत्रिय);
  - ✓ माता: त्रिशला(लिच्छवी राजकुमारी और जो इसके प्रमुख चेतक की बहन थी)
  - ✓ पत्नी: यशोदा;
  - ✓ पुत्री: अनोज्जा प्रियदर्शना; इनका विवाह 'जामालि' (महावीर के प्रथम शिष्य) से हुआ।

- गृहत्याग- उन्होंने 30 वर्ष की उम्र में अपना घर छोड़ दिया और सच्चे ज्ञान की तलाश में 12 साल तक भटकते रहे। उन्होंने गंभीर तपस्या का अभ्यास किया और अपने कपड़ों को त्याग दिया। ।
- ज्ञान प्राप्ति: 42 वर्ष की आयु में जृम्भिक ग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान (कैवल्य) प्राप्त हुआ और इस कारण इन्हें 'केवलिन' कहा जाता है। कैवल्य नामक उच्चतम आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर और उन्होंने दुख और सुख पर विजय प्राप्त की।
- मृत्यु: 468 ई. पू., पावापुरी (72 वर्ष) (बिहारशरीफ, बिहार)।
- उन्होंने पावा (पटना के पास) में अपना उपदेश दिया और अपना पूरा जीवन अंग, मिथिला, मगध और कोसल में अपने दर्शन का प्रचार करने में बिताया

जैन दर्शन -

- जैन धर्म का मानना है कि मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति है, जिसका अर्थ है जन्म और मृत्यु से मुक्ति। यह त्रिरत्न और पंचव्रत के अनुसरण से प्राप्त किया जा सकता है।
- मोक्ष/मुक्ति तीन सिद्धांतों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जिसे 'त्रिरत्न' कहा जाता है, ये हैं-
  1. सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान)
  2. सम्यक दर्शन (सही विश्वास/आस्था)
  3. सम्यक चरित (सही आचरण)
- सम्यक आचरण का अर्थ है पाँच महान व्रतों (पंचमहाव्रत) का पालन करना :
- पंचमहाव्रत (अणुव्रत) -
  1. अहिंसा (हिंसा नहीं करना)।
  2. सत्य (सच बोलना)।
  3. अस्तेय (चोरी नहीं करना)।
  4. ब्रह्मचर्य (संयमित जीवन जीना)।
  5. अपरिग्रह (भौतिक वस्तुओं से अलग रहना)।
- जैन धर्म ने देवताओं के अस्तित्व को मान्यता दी लेकिन उन्हें जिन से निम्न स्थान दिया ।
- अनेकांतवाद/स्यादवाद - जैन धर्म में अनेकांतवाद की एक मौलिक धारणा है जो परम सत्य पर जोर देता है इसके अनुसार कोई भी इकाई एक बार में स्थायी होती है, लेकिन परिवर्तन से भी गुज़रती है जो निरंतर और अपरिहार्य है।

जैन धर्म संगीति -

जैन परिषद	स्थान	अध्यक्षता	विवरण
प्रथम जैन संगीति: 298 ई.पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र (बिंदुसार द्वारा संरक्षित)	जैन धर्म की पवित्र शिक्षाओं को 12 अंगों में संकलित किया गया। (महावीर की पवित्र शिक्षाओं का वर्णन)
द्वितीय जैन संगीति: 512 ई.	वल्लभी, गुजरात	देवर्धि क्षमाश्रवण	12 उपांग (लघु खंड) जोड़े गए।

जैन धर्म की शाखाएँ –

आधार	श्वेताम्बर	दिगम्बर
संस्थापक	स्थूलभद्र	भद्रबाहु
वेश-भूषा	सफेद वस्त्र	निर्वस्त्र
क्षेत्र	उत्तर भारत	दक्षिण भारत

बौद्ध धर्म -

- भिन्नमत(विधर्मी) संप्रदायों में, बौद्ध धर्म सबसे लोकप्रिय था। यह विभिन्न शासकों द्वारा संरक्षित एक शक्तिशाली धर्म के रूप में उभरा।
- संस्थापक: गौतम बुद्ध (शाक्य वंश)।
- जन्म: कपिलवस्तु (नेपाल की तलहटी में स्थित) में लुंबिनी के पास 563 ईसा पूर्व में हुआ था।
- बचपन का नाम: सिद्धार्थ।
- पिता: शुद्धोधन; माता: महामाया देवी।
- सौतेली माता/मौसी: महाप्रजापति गौतमी(लालन-पालन किया)
- पत्नी: यशोधरा; पुत्र: राहुल.
- वे 4 दृश्य जिन्होंने बुद्ध को आर्य सत्य की खोज में सांसारिक सुखों को त्यागने के लिए प्रेरित किया:
  - ✓ एक बूढ़ा आदमी
  - ✓ एक बीमार आदमी
  - ✓ एक शव
  - ✓ एक धार्मिक भिक्षुक
- 29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ ने गृह त्याग कर दिया । वे अपने घोड़े कंथक पर सवार होकर अपने सारथी चन्ना के साथ घर से निकले। उन्होंने अपने बाल काटकर, परिधान और आभूषण अपने पिता को भिजवा दिए। इसे महाभिनिष्क्रमण के रूप में जाना जाता है।
- सिद्धार्थ विभिन्न स्थानों पर भटकते रहे और थोड़े समय के लिए अलार कलाम के शिष्य बने। उन्होंने साधु उद्दक रामपुत्र से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- उन्होंने अपना पहला उपदेश वाराणसी के निकट सारनाथ के एक मृगदाय में दिया। इस घटना को धर्मचक्र-प्रवर्तन कहा जाता है।
- उन्होंने चार आर्य सत्य और मध्य मार्ग के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि संसार दुखों से भरा हुआ है और लोगों का दुख उनकी इच्छाओं के कारण है। यदि इच्छाओं को जीत लिया जाए, तो निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
- 80 वर्ष की आयु में, 483 ईसा पूर्व में, उनका कुशीनगर में महापरिनिर्वाण हुआ।

नोट: प्रतीक -

- ✓ जन्म: कमल/बैल
- ✓ गृह त्याग: घोड़ा
- ✓ आत्मज्ञान : बोधि वृक्ष
- ✓ पहला उपदेश (धर्मचक्रप्रवर्तन): पहिया
- ✓ मृत्यु (परिनिर्वाण): स्तूप

बौद्ध दर्शन

बुद्ध के चार आर्य सत्य ।

1. दुःख (दुःख का सत्य) :जन्म, बुढ़ापा, मृत्यु, अप्रियता, बिछड़ना, अधूरी इच्छाएं – ये सभी दुख के कारण हैं।
2. दुःख समुदाय (दुःख के कारण का सत्य): सुख, शक्ति, लंबी आयु आदि की प्यास ही दुख का मूल कारण है।
3. दुःख निरोध (दुःख के अंत का सत्य): दुख का पूर्ण अंत या उससे मुक्ति ही निर्वाण है।
4. दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा (दुःख के अंत का मार्ग): यह आर्य अष्टांगिक मार्ग या मध्य मार्ग है।

बुद्ध का मध्य मार्ग या अष्टांगिक मार्ग

- बौद्ध धर्म कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास करता है। व्यक्ति के इस जन्म की स्थिति उसके पिछले कर्मों पर निर्भर करती है। कर्मों के बंधन या पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति ही निर्वाण है। इसे प्राप्त करने के लिए मध्य मार्ग का पालन करना आवश्यक है।

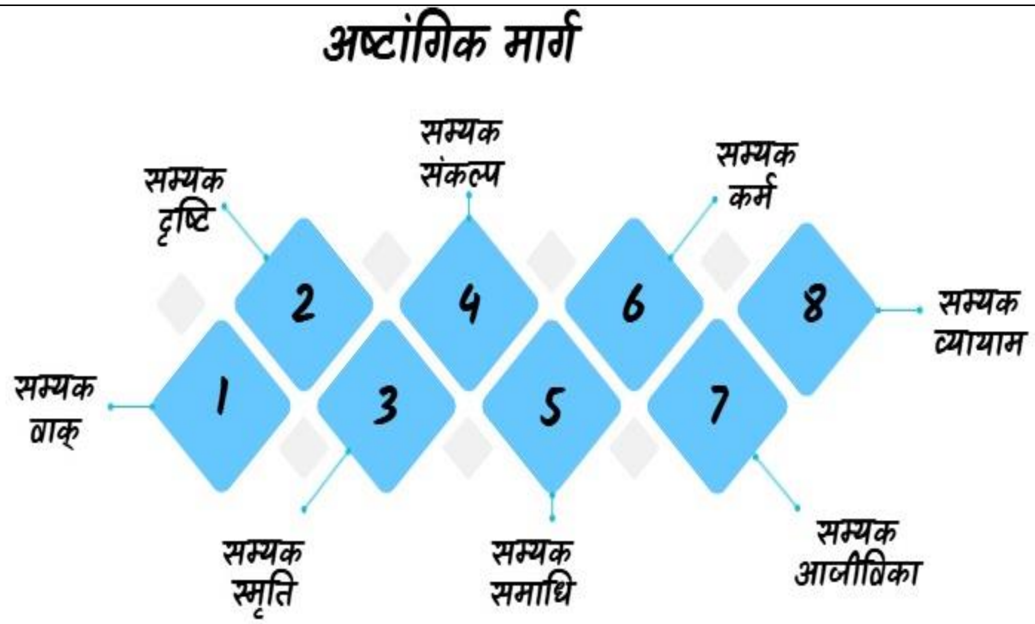

➢ बुद्ध ने ईश्वर का उल्लेख या उसके बारे में बात नहीं की। उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को न तो स्वीकार किया और न ही इनकार किया। बौद्ध धर्म समानता की वकालत करता था। उन्होंने सभी के प्रति अहिंसा और प्रेम का उपदेश दिया।

बौद्ध धर्म के तीन रत्न (त्रिरत्न) –

a. बुद्ध: ज्ञान प्राप्त व्यक्ति।
b. धम्म: बुद्ध की शिक्षाएँ (सिद्धांत)।
c. संघ: भिक्षु समुदाय (मठवासी व्यवस्था)।

<u>बौद्ध धर्म के संप्रदाय –</u>

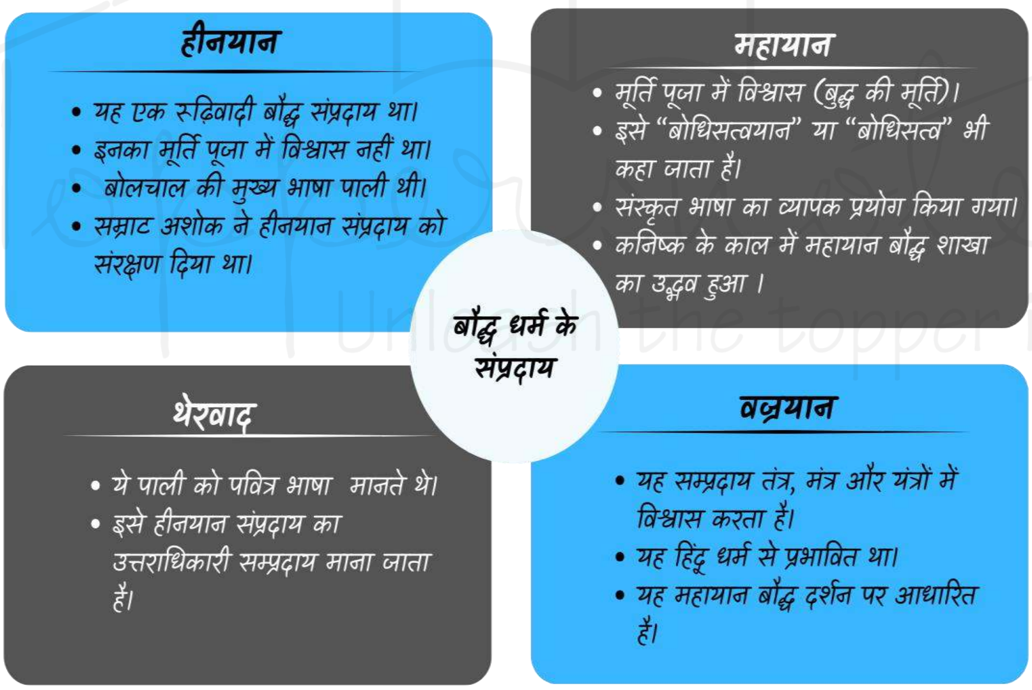

नोट: बौद्ध धर्म शब्दावली

➢ चैत्य: पूजा का स्थान
➢ विहार: निवास स्थान
➢ धम्म: धर्म
➢ स्तूप: गुंबद के आकार की छत → अर्ध-वृत्ताकार संरचना।

बौद्ध संगीतियाँ

स्थान	पृष्ठभूमि	अध्यक्षता	परिणाम
1. राजगृह (400/483 ई.पू.)	अजातशत्रु	महाकश्यप	विनय पिटक का संकलन- उपाली द्वारा। सुत्त पिटक का संकलन- आनंद द्वारा।
2. वैशाली (383 ई.पू.)	कालाशोक	सबकामी/साबकमीर	बौद्ध संघ का विभाजन - स्थविरवादी (बड़ों की शिक्षाओं में विश्वासी) और महासांघिक('महान समुदाय के सदस्य') ।
3. पाटलिपुत्र (250 ई.पू.)	अशोक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	स्थविरवादी ने स्वयं को दृढ़ता से स्थापित किया और विधर्मियों को निष्कासित कर दिया। अभिधम्म पिटक में "कथावत्तु" नामक अंतिम खंड जोड़ा गया था।
4. कश्मीर (72 ई.)	काणिष्क	वसुमित्र	स्थविरवादी बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण संप्रदाय था। इसके सिद्धान्तों का संकलन महाविभाषा में किया गया।

बौद्ध साहित्य -

- बौद्ध साहित्य: “त्रिपिटक” में उल्लेखित है।

विनय पिटक	सुत्त पिटक	अभिधम्म पिटक
➢ इसमें बौद्ध भिक्षुओं द्वारा पालन किए जाने वाले नियमों और विनियमों को शामिल किया गया है।	➢ इसमें बुद्ध के संवाद और शिक्षाएँशामिल हैं जो नैतिकता और पवित्रधर्म से संबंधित हैं। ➢ 5 भागों में विभाजित- 1. खुद्दक निकाय 2. अंगुत्तर निकाय 3. दीघ निकाय 4. मज्झिम निकाय 5. संयुक्त निकाय	➢ दर्शन और तत्वमीमांसा से संबंधित है। इसमें नैतिकता, ज्ञान के सिद्धांत और मनोविज्ञान जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा भी शामिल है।

- **पाली (प्रमुख रूप से):** मिलिंद पान्हो द्वारा लिखित मिलिंद पन्हो (मिलिंडा और नागसेना के बीच संवाद)।
- **संस्कृत:** अश्वघोष द्वारा → बुद्धचरित्र
- जातक कथाओं में मानव और पशु दोनों रूपों में बुद्ध के पिछले जन्म के बारे में जानकारी है।